Indian Streams Research Journal ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

टेलीविजन कार्यक्रमों का बच्चों पर प्रभाव (वर्धा शहर के विशेष संदर्भ में)

धरवेश कठेरिया,[1] रवि कुमार[2] शिवांजलि कठेरिया,[3] रुपाली अलोने,[4] प्रेम कुमार[5] निरंजन कुमार[6]

[1]सहायक प्रोफेसर, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)।
[2]सहायक प्रोफेसर, भारतीय एवं विदेशी भाषा प्रगत अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)।
[3]पूर्व सीनियर सब एडिटर 'द हितवाद' समाचारपत्र, जबलपुर, मध्यप्रदेश।
[4]शोधार्थी एम. फिल, माइग्रेशन, डायस्पोरा एवं पारदेशीय सांस्कृतिक अध्ययन, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)।
[5]शोधार्थी एम फिल, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)।
[6]शोधार्थी, एवं स्वतंत्र लेखन।

सारांश: प्रस्तुत शोध अध्ययन के अनुसार टेलीविजन पर बच्चों के लिए प्रस्तुत कार्यक्रमों में दिखाए जाने वाली कथानकों और विषय वस्तुओं का बच्चों के व्यक्तित्व और मानसिकता पर बहुत गहरा प्रभाव होता है। शोध अध्ययन में टेलीविजन देखने वाले वर्धा शहर के सौ से अधिक परिवारों के बच्चों को शामिल किया गया है। शोध से प्राप्त नतीजे बेहद चौंकाने वाले रहे। नतीजों के अनुसार टेलीविजन अधिक देखने वाले बच्चों की मानसिकता में महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिले। अध्ययन के अनुसार टेलीविजन कार्यक्रमों में दिखाए जाने वाले घटनाक्रमों को बच्चे यथार्थ से जोड़ लेते हैं। जिसके बाद वे अपने जीवन को उसी दृष्टिकोण से देखने लगते हैं। शोध के अनुसार आमतौर पर टेलीविजन कार्यक्रमों में बच्चों को झूठ बोलना और अपनी जिद पूरी करने के लिए अभिभावकों से झगड़ता दिखाया जाता है। इन्हीं सब घटनाक्रमों से प्रभावित बच्चे यह मानने लगते हैं कि अपनी जरूरतों के हिसाब से झूठ बोला जाना उचित है।

शोध परिणामों के अनुसार टेलीविजन कार्यक्रम को देख कर हकीकत से अनभिज्ञ बच्चे उसमें दिखाए जाने वाले घटनाक्रम को सही समझते हैं। उन्हें अपने जीवन के साथ जोड़ना शुरु कर देते हैं। निश्चित रूप से इसके नतीजे उनके लिए घातक सिद्ध होते हैं। कई बार हालात इतने ज्यादा नकारात्मक हो जाते हैं कि उन पर नियंत्रण रख पाना मुश्किल हो जाता है। टेलीविजन कार्यक्रमों में हकीकत का नाम देकर फूहड़ता को प्रदर्शित करना कोई नई बात नहीं है। परन्तु इसका बच्चों के चरित्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। टेलीविजन शो में दिखाए जाने वाली कथानकों पर विश्वास करना उनकी मानसिकता को दूषित करने के साथ–साथ परिवार और समाज को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इसीलिए बच्चों के लिए रियलिटी शो को मनोरंजन की नजर से ही देखना बेहतर होगा। इसके अलावा अभिभावकों का भी कर्तव्य बनता है कि वह अपने बच्चों को रियलिटी शो और उससे जुड़ी सच्चाई से अवगत करवाएं। इतना ही नहीं उनके हर बर्ताव पर नजर रखें और अगर वह गलत दिशा की ओर अग्रसर हों तो उन्हें तर्कसंगत उदाहरणों के माध्यम से समझाएं। प्रस्तुत शोध में ऐसे ही बिन्दूओं का अध्ययन 'टेलीविजन कार्यक्रमों का बच्चों पर प्रभाव' के संदर्भ में करने का प्रयास किया गया है।

शब्द–कुंजी : सह–संबंध, चर्चा, कर्तव्य, फूहड़ता, घातक, हकीकत, सशक्त, दहशत, घबराहट, भय, असुरक्षा, परिवार, मनोरंजन, सकारात्मक, नकारात्मक, अंधविश्वास, मायाजाल, अश्लीलता, आपत्तिजनक, मनोवृत्ति, सत्साहित्य, मोहजाल।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत अध्ययन में शोध हेतु विश्लेषण एवं सैम्पलिंग पद्धति का सहयोग लिया गया है। तथ्य संकलन हेतु वर्धा शहर के सौ घरों का चयन किया गया है जिनके घरों में टेलीविजन सेट उपलब्ध हैं। ताकि यह विश्लेषित किया जा सके कि टेलीविजन पर कार्यक्रम देखने वाले बच्चों में किस प्रकार का अंतर है। शोध में टेलीविजन कार्यक्रमों से संबंधित विभिन्न लेख, रिपोर्ट, पूर्व अध्ययन, पुस्तकें, शोध पत्रिकाएं एवं विभिन्न समसामयिक पत्र–पत्रिकाओं का सहयोग लेते हुए अध्ययन को स्वरूप प्रदान किया गया है। शोध में बच्चों से संबंधित टेलीविजन कार्यक्रमों एवं बच्चों के सहसंबंधों पर विस्तार से चर्चा की गई है। इसके साथ ही टेलीविजन कार्यक्रमों से बच्चों पर होनेवाले विभिन्न प्रकार के प्रभावों का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना :

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'टेलीविजन कार्यक्रमों का बच्चों पर प्रभाव' विषय के अध्ययन क्षेत्र के रूप में वर्धा के शहरी क्षेत्र को चुना गया है। अध्ययन में 5 वर्ष से 10 वर्ष के बच्चों को शामिल किया गया है। अध्ययन हेतु तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें 10 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। जिनमें टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रति बच्चों की अभिरुचि, चयन एवं अन्य विषय प्रश्न के रूप में शामिल किए गए हैं। तथ्य संकलन हेतु अभिभावकों से सौ प्रश्नावलियों को भरवाया गया है।

बचपन कच्ची मिट्टी की तरह होता है जिसे हम जैसा आकार दें वह वैसा ही रूप ले लेता है। टेलीविजन को आज छोटे बच्चों से लेकर बड़े–बुजुर्ग तक देखना पसंद करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में टेलीविजन कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षा, मनोरंजन करना था पर अब चैनलों की संख्या में काफी वृद्धि हो गई है। साथ में उनके प्रसारण में भी बदलाव आया है। पहले परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर कार्यक्रम देखते थे पर अब संभव नहीं है। अब टेलीविजन चैनलों में गुणात्मक वृद्धि हुई है। आज दर्शकों की रुचि के अनुरूप कार्यक्रमों को बनाया जा रहा है। इस बदली हुई स्थिति का सबसे ज्यादा असर आने वाली नई पीढ़ी पर होना स्वाभाविक है। बचपन जिंदगी का ऐसा हिस्सा होता है जहां शारीरिक व मानसिक समझ का निरंतर विकास हो रहा होता है। ऐसी स्थिति में टेलीविजन पर दिखाए जा रहे नकारात्मक दृष्टिकोण के कार्यक्रम बच्चों के लिए हानिकारक साबित होते हैं। टेलीविजन एक सशक्त माध्यम होते हुए भी समस्याओं का कारण बनने लगा है। अवसाद की अनेक बीमारियां आज टेलीविजन की ही देन मानी जा रही है। (भारत में संचार माध्यम, 252)

टेलीविजन अधिक देखने के कारण बच्चे अब बाहरी खेल–कूद, भाग–दौड़ नहीं करते और दिन भर टेलीविजन देखते रहते हैं जिस वजह से उनको दिल की बीमारियां अधिक हो रही है, साथ ही कम उम्र के बच्चे मोटापा के शिकार हो रहे हैं। टेलीविजन के चित्रों की गति तेज होने के कारण से बच्चों में सिरदर्द होना व आंखों में कमजोरी होने की आशंका बढ़ती है। टेलीविजन कार्यक्रमों में जो विज्ञापन दिखाये जाते हैं, उन्हें देखकर बच्चे उसी वस्तु की मांग अपने घर में भी करते हैं, जो की उनके स्वास्थ की दृष्टि से हानिकारक है। बच्चों के अत्याधिक टेलीविजन देखने के कारण उनका रात को सोने के समय पर भी असर हो रहा है जिससे वह देर रात तक सोते नहीं हैं, इस कारण वह चिड़चिड़े व बदमिजाज हो गये हैं। शारीरिक गतिविधियों एवं खेलकूद में भी टेलीविजन के वजह से काफी कमी आई है, जो शारीरिक और मानसिक दृष्टि से हानिकारक है। टेलीविजन कार्यक्रमों का बच्चों की भाषा पर भी बुरा असर पड़ रहा है। कुछ कार्यक्रम ऐसे हैं जो बड़े और बच्चे एक साथ बैठकर नहीं देख सकते हैं, इसलिए कार्यक्रमों का वर्गीकरण आयु के अनुरूप होना चाहिए। बच्चे बलात्कार, हत्या आदि विषयों की समझ के बगैर इनको देख रहे हैं, जिससे उनके सोचने व समझने पर गलत असर पड़ रहा है। बच्चे टेलीविजन देखकर हू–ब–हू वैसे ही नकल

ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

करते हैं, नाट्यरूपांतरण कार्यक्रमों में बताया जाता है की नाम या स्थान काल्पनिक है लेकिन बच्चे इस अंतर को समझ नही पाते हैं। और दिखाए जा रहे कार्यक्रमों को हकीकत के रूप में लेते हैं। इस वजह से अनेक बच्चे हादशों का शिकार भी हुए है।

लेकिन आज टेलीविजन बच्चों का पसंदीदा माध्यम बन गया है, इनदिनों बच्चे टेलीविजन के ज्यादा आदी हो चुके हैं। टेलीविजन देखने के वजह से बच्चों के मानसिक विकास पर नकारात्मक असर हो रहा है।

तथ्य विश्लेषण एवं आकड़ों का प्रस्तुतीकरण :

शोध तथ्यों के अनुसार टेलीविजन चैनलों पर दिखाए जाने वाले कार्टून कार्यक्रम बच्चों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। शोध में शामिल किए गए घरों में कम उम्र वाले बच्चों में कार्टून कार्यक्रमों के प्रति एक खास तरह का आकर्षण देखा गया है। इन कार्टून कार्यक्रमों का बच्चों के दिलो–दिमाग पर गहरा असर हो रहा है। शोध अध्ययन से यह तथ्य उजागर होता है कि टेलीविजन कार्यक्रमों का बच्चों के मनोमस्तिष्क पर व्यापक असर होता है। प्रश्न क्रमांक 01 के संदर्भ में तथ्य इस प्रकार हैं– शोध में शामिल किए गए 90 फीसदी बच्चों को कार्टून चैनल देखना बेहद पसंद है। जबकि 01 प्रतिशत बच्चे धारावाहिक एवं अन्य कार्यक्रमों की ओर आकर्षित होते हैं। सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों में बच्चों की रुचि केवल 03 प्रतिशत ही है। वहीं 06 फीसदी बच्चे मनोरंजक कार्यक्रम देखना पसंद करते हैं। तथ्यों का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार है–

प्रश्न क्रमांक 01. आपके बच्चे किस प्रकार के कार्यक्रम देखना पसंद करते हैं?

क्रमांक	विवरण	मत	प्रतिशत
1	कार्टून	90	90
2	धारावाहिक	01	01
3	ज्ञानवर्धक	03	03
4	मनोरंजन एवं अन्य	06	06
5	कुल योग	100	100

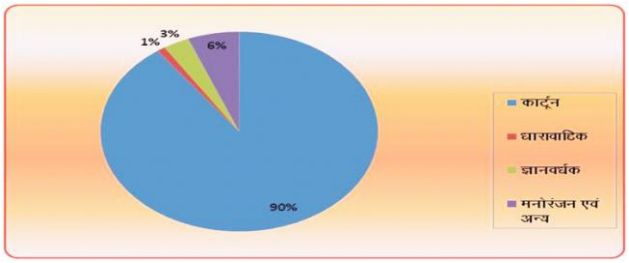

प्रश्न क्रमांक 02 'आपके बच्चे कितने घंटे प्रतिदिन टेलीविजन देखते हैं?' के संदर्भ में तथ्य इस प्रकार है– जबकि औसतन हर रोज 40 प्रतिशत बच्चे 4–5 घंटे, 3–4 घंटे 15 प्रतिशत, 2–3 घंटे 30 प्रतिशत एवं 1–2 घंटे केवल 10 प्रतिशत बच्चे प्रतिदिन टेलीविजन देखते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चों की टेलीविजन कार्यक्रमों में अधिक रुचि ऐसे कार्यक्रमों में है जिनमें उनका हित नहीं है। ऐसी स्थिति तब है जब शोध में शामिल किए गए माता–पिता में से 80 फीसदी का मानना है कि उनके बच्चे टेलीविजन देखने के आदि हो चुके हैं। (प्रश्न क्रमांक 03 क्या आपके बच्चे टेलीविजन देखने के आदि हो चुके हैं?)

जबकि प्रश्न क्रमांक 04 के संदर्भ में 'क्या आपके बच्चे की पढ़ाई पर टेलीविजन कार्यक्रमों का असर हो रहा है?' तथ्य काफी रोचक सामने आते हैं– 37 प्रतिशत अभिभावक हां में उत्तर देते हैं जबकि 25 प्रतिशत नहीं में और 28 प्रतिशत थोड़ा–बहुत एवं 10 प्रतिशत पता नहीं में उत्तर देते हैं इन आकड़ों से एक बात तो साफ हो जाती है कि टेलीविजन कार्यक्रमों के कारण अधिकतर बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। इसी प्रकार प्रश्न क्रमांक 05 के संदर्भ में 'क्या टेलीविजन देखने से बच्चे एकांत प्रिय हो रहे हैं?' के भी तथ्य काफी रोचक हैं, 60 प्रतिशत हां, 30 प्रतिशत नहीं एवं 10 प्रतिशत थोड़ा–बहुत रहा।

प्रश्न क्रमांक 06 के प्रस्तुत आकड़ों से और भी दिलचस्प पहलू देखने को मिलते हैं। तथ्यों के अनुसार 70 फीसदी मां–बाप मानते हैं कि उनके बच्चे समय से पहले युवा हो रहें हैं। आकड़ों का प्रदर्शन इस प्रकार है–

प्रश्न क्रमांक 06. क्या टेलीविजन देखने से बच्चे समय से पहले युवा हो रहें है?

क्रमांक	विवरण	मत	प्रतिशत
1	हां	70	70
2	नहीं	09	09
3	थोड़ा–बहुत	13	13
4	पता–नहीं	08	08
	कुल योग	100	100

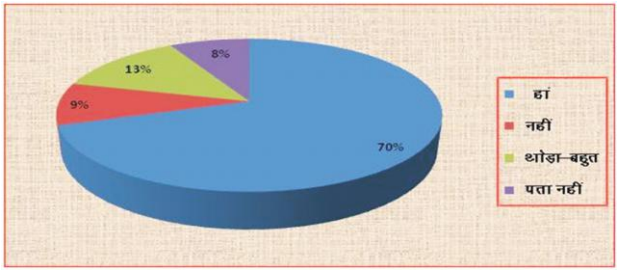

प्रश्न क्रमांक 07 'क्या बच्चों के टेलीविजन देखने से उनका वास्तविक विकास प्रभावित हो रहा है?' के प्रस्तुत आकड़ों के संदर्भ में 55 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं कि उनके बच्चों का वास्तविक विकास अत्यधिक टेलीविजन देखने के कारण प्रभावित हो रहा है, जबकि 30 प्रतिशत नहीं, 15 प्रतिशत थोड़ा–बहुत परिवर्तन को स्वीकार करते हैं।

नीचे वर्णित प्रश्न क्रमांक 08 में अभिभावकों से जानने की कोशिश की गई है कि उनके बच्चों पर टेलीविजन कार्यक्रमों का असर किस प्रकार पड़ रहा है?तथ्यों के अनुसार 63 प्रतिशत अभिभावकों का स्पष्ट मानना है कि उनके बच्चे टेलीविजन पर हिंसात्मक कार्यक्रम देखने के कारण अब आपराधिक प्रवृत्ति आधारित कार्यक्रमों को ज्यादा देखना पसंद कर रहे हैं। वहीं इस संबंध में सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि अधिकतर अभिभावक यह जानते हैं कि टेलीविजन कार्यक्रमों का उनके बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव हो रहा है। इसके बावजूद वे अपने बच्चों पर नियंत्रण लगाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। तथ्यों का प्रदर्शन इस प्रकार है–

प्रश्न क्रमांक 08. क्या टेलीविजन पर हिंसात्मक कार्यक्रम देखने के कारण बच्चों में अपराधिक प्रवृत्ति का विकास हो रहा है?

क्रमांक	विवरण	मत	प्रतिशत
1	हां	63	63
2	नहीं	14	14
3	थोड़ा–बहुत	12	12
4	पता–नहीं	11	11
	कुल योग	100	100

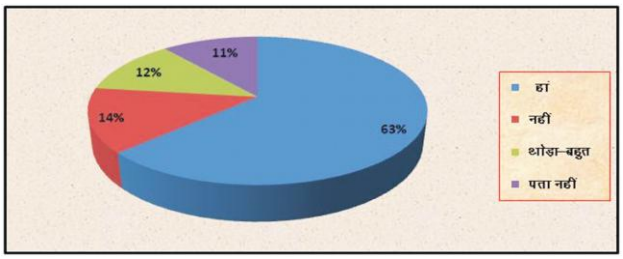

प्रश्न क्रमांक 09 'क्या टेलीविजन कार्यक्रमों के वजह से बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है?' के अनुसार 51 फीसदी बच्चों के अभिभावक मानते हैं कि उनके बच्चे टेलीविजन कार्यक्रम देखने के कारण अपनी सेहत खराब कर रहे हैं। और उनकी सोच नकारात्मक हो रही है। वे चाह कर भी अपने बच्चों को टेलीविजन देखने से मना नहीं कर पाते हैं। बच्चों के जिद के आगे हारकर वे टेलीविजन चैनल का रिमोट उनके हाथ में थमा देते हैं। कई अभिभावक का साफ–साफ मानना हैं कि टेलीविजन चैनलों के कार्यक्रमों के कारण उनके बच्चों पर गंभीर नकारात्मक असर हो रहा है। जबकि 25 फीसदी मां–बाप असहमत नजर आते हैं और 24 प्रतिशत थोड़ा–बहुत सहमत नजर आते है। लेकिन

अधिकांश अभिभावकों का मानना है कि टेलीविजन कार्यक्रम उनके बच्चों के लिए हानिकारक हैं।

शोध का सबसे दिलचस्प तथ्य प्रश्न क्रमांक 10 में देखने को मिलता है क्योंकि तथ्यों के अनुसार 84 प्रतिशत से अधिक बच्चों का व्यवहार टेलीविजन कार्यक्रमों के पात्रों जैसा हो गया है। जबकि 08 फीसदी अभिभावक इससे सहमत नहीं है। आकड़ों का प्रदर्शन इस प्रकार है–

प्रश्न क्रमांक 10. क्या टेलीविजन कार्यक्रमों से प्रभावित होकर बच्चों का व्यवहार टेलीविजन कार्यक्रमों के पात्रों जैसा हो गया है?

क्रमांक	विवरण	मत	प्रतिशत
1	हां	84	84
2	नहीं	08	08
3	थोड़ा–बहुत	06	06
4	पता–नहीं	02	02
	कुल योग	100	100

शोध प्रभाव एवं निष्कर्ष :

टेलीविजन के शुरुआती दिनों में टेलीविजन पर मनोरंजन के नाम पर समाचार या फिर दिन में एक समय गानों का कार्यक्रम प्रसारित होता था, उस समय शायद ही किसी ने यह कल्पना की होगी कि बदलते समय के साथ–साथ मनोरंजन के क्षेत्र में इस कदर विस्तार हो जाएगा कि आपके लिए यह निर्णय लेना भी मुश्किल होगा कि आप कौन सा कार्यक्रम देखना चाहते हैं। दरअसल टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले ज्यादातर कार्टून कार्यक्रम शैतानी और तिलस्मी दुनिया के किस्सों पर आधारित होते हैं। इसलिए इन कार्यक्रमों को देखने वाले बच्चों के मन में भी शैतानी और तिलस्मी दुनिया को लेकर अंधविश्वास कायम होता जा रहा है। जबकि एक दौर था जब बच्चे अपने परिवार और आस–पड़ोस से संस्कार ग्रहण करते थे। पर आज संस्कार देने का काम टेलीविजन कर रहा है। यही वजह है कि 'इडियट बॉक्स' कहे जाने वाले टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों का बच्चों पर गहरा असर पड़ रहा है। कार्टून कार्यक्रम देखने के दौरान बच्चे ऐसी बातों से परिचित हो रहे हैं जो उनकी मानसिक और शारीरिक स्थिति के हिसाब से अनुचित है। ज्यादातर कार्टून कार्यक्रम हिंसा पर आधारित होते हैं। वहीं कई कार्टून कार्यक्रम ऐसे हैं जो अंधविश्वास का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। कहा जा सकता है कि कार्टून के जरिए बच्चे ऐसे संस्कारों को ग्रहण कर रहे हैं जो उनकी मानसिकता में आमूल–चूल परिवर्तन ला रहे हैं। यह बदलाव सकारात्मक नहीं बल्कि नकारात्मक ही है। मनोचिकित्सकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि कार्टून कार्यक्रमों से बच्चों में दहशत, घबराहट, भय और असुरक्षा की भावना पैदा होती है, जो उनके मानसिक विकास में अवरोधक है। कई अध्ययनों ने भी इस बात को प्रामाणित किया है कि कार्टून कार्यक्रम बच्चों के मानसिक विकास में बाधक हैं।

प्रस्तुत शोध से यह तथ्य सामने आते हैं कि जो बच्चे हिंसात्मक कार्टून देखते हैं, उनकी संवेदनशीलता कम होती जा रही है। ऐसे बच्चों में हिंसा के प्रति घृणा का भाव खत्म हो जाता है और उनके आक्रामक होने की संभावना बढ़ जाती है। कहना न होगा कि मानव मस्तिष्क के विकास में प्रकृति और परिवेश दोनों की अहम भूमिका होती है। लेकिन जब बच्चे टेलीविजन के जरिए मानसिक रूप से हिंसात्मक दुनिया में विचरण करते हैं तो जाहिर है कि वे सामाजिक सरोकारों से कट जाते हैं। ऐसे बच्चों के लिए अपने आस–पड़ोस के बच्चों से घुलमिल पाना भी आसान नहीं होता। और ऐसे में बच्चे अकेलापन पसंद करने लगते हैं। कार्टून देखने वाले बच्चों में यह प्रवृत्ति देखी जा रही है। हालांकि, मनोचिकित्सकों ने और चिकित्सा क्षेत्र की प्रमुख पत्रिकाओं ने यह जरूर कहा है कि अगर बच्चे घंटे–दो घंटे कार्टून कार्यक्रम देखें तो उन पर कोई नकारात्मक असर नहीं पड़ता लेकिन अगर ये घंटे बढ़ेंगे तो कार्टून कार्यक्रमों के नकारात्मक प्रभावों से बचा नहीं जा सकता है। परन्तु मौजूदा हालात चिंताजनक है। जिन घरों में टेलीविजन है तकरीबन ऐसे सभी घरों के बच्चे घंटों कार्टून आधारित कार्यक्रम देख रहे हैं। आजकल देखा जा रहा है कि बच्चे काफी छोटी उम्र से कार्टून कार्यक्रम देखने लगते हैं और तीन से चार साल की उम्र तक पहुंचते–पहुंचते ये ऐसे कार्यक्रमों के आदी हो जाते हैं। इन बच्चों के कार्टून कार्यक्रम देखने के घंटों में दिनोंदिन बढ़ोत्तरी होती ही जा रही है। कई बार तो ऐसा भी होता है कि अभिभावक चाहते हुए भी बच्चों की जिद के आगे झुकने को मजबूर हो जाते हैं और उन्हें कार्टून कार्यक्रम देखने से नहीं रोक पाते हैं।

टेलीविजन स्क्रीन पर तेजी से बदलते चित्र आंखों की कोशिकाओं के लिए बेहद खतरनाक होते हैं। स्क्रीन पर तेजी से बदलते चित्रों का सबसे ज्यादा नकारात्मक असर आंखों की उन कोशिकाओं पर पड़ता है जिनके जरिए दृश्य संदेश मस्तिश्क तक पहुंचती है। बचपन के दिनों से ही इन कोशिकाओं का कमजोर होना उनके भविष्य की दृष्टि से बिल्कुल भी अनुकूल नहीं है। इन कोशिकाओं का कमजोर होना बच्चों के विकास पर नकारात्मक असर डालता है। भारत में देसी–विदेशी टेलीविजन चैनलों के जरिए दिखाए जाने वाले ज्यादातर कार्टून कार्यक्रम विदेशी पृष्ठिभूमि पर आधारित होते हैं। इन कार्यक्रमों का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद के उपरान्त भारतीय बच्चों के समक्ष परोसा जा रहा है। अनुवाद के उपरान्त दिखाए जाने वाले कार्टून कार्यक्रमों की भाषा तो बदल दी जाती है, परन्तु इनके कथानक जैसी बारीकियों को जस की तस ही रहने दिया जाता है।

कहना गलत न होगा कि जो कार्यक्रम विदेशों में निर्मित किए जा रहे हैं वे वहां के परिवेश को परिभाषित करते हैं। पश्चिमी देशों के परिवेश और भारत के परिवेश में बेहद अन्तर है। जिन रिवाजों को पश्चिमी देशों में सामाजिक मान्यता प्राप्त है भारत में भी वे उसी रूप में स्वीकार्य हों यह आवश्यक नहीं है। इस बात को समझना बेहद जरूरी है कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता पश्चिमी देशों से बहुत ही भिन्न है। इसलिए कहा जा सकता है कि विदेशी परिवेश में निर्मित कार्टून भारत में खास तरह का सांस्कृतिक संक्रमण फैला रहे हैं। दुर्भाग्यवश मासूम बच्चे इनके आसान शिकार बन रहे हैं। जाहिर सी बात है कि मासूम इस बात से अनजान है कि उन्हें निशाना बनाया जा रहा है और ये कार्यक्रम उनकी सोच व दृष्टिकोण का प्रभावित करेंगे। आखिरकार यह जिम्मेदारी अभिभावकों की है कि इन बेतुके कार्यक्रमों के मोहजाल से बच्चों को बाहर निकालें। मासूमों को कार्टून के मायाजाल से निकालना बेहद जरूरी है और इसमें निश्चित तौर पर अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अभिभावकों का अपने बच्चों में सकारात्मक सोच विकसित करने के साथ–साथ उनमें अन्य खेलों के प्रति दिलचस्पी पैदा करना उनके स्वास्थ विकास के लिए अति आवश्यक है। साथ ही अभिभावकों को चाहिए कि वे तर्कसंगत उदाहरणों के माध्यम से बच्चों को सही व गलत में अन्तर करना सिखाए। इसी बहाने बच्चों में वैज्ञानिक सोच की जमीन तैयार करनी होगी।

टेलीविजन पर हिंसा के कार्यक्रम देखने वाले बच्चों की मानसिकता पर हिंसा ही छाई रहती है। इससे उनके व्यवहार में तब्दीली आना स्वाभाविक है। काल्पनिक दुनिया का असल जीवन में ऐसा दखल निश्चय ही घातक है। हाल में आई एसोचैम की एक रिपोर्ट के मुताबिक टेलीविजन कार्यक्रमों में बढ़ती अश्लीलता और आपत्तिजनक शब्दों के प्रयोग ने अभिभावकों की नींद उड़ा दी है। एसोचैम की इस रिपोर्ट में कहा गया है कि ज्यादा टेलीविजन देखने से इन बच्चों के स्वभाव में बदलाव आ रहा है। बच्चों की मनोवृत्ति बदल रही है और उनमें हिंसक प्रवृत्ति का भी इजाफा हो रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन में पाए गए तथ्यों के अनुसार बच्चे टीवी पर आने वाले अपने पसंदीदा कार्यक्रमों को देखने के बाद हूबहू वही करने की कोशिश करते हैं जिसे वे अपने रोल मॉडल को टीवी पर करता हुआ देखते हैं। भले ही टीवी पर परोसे जाने वाले कार्यक्रमों के प्रसारित होने से पहले बता दिया जाता है कि जो कुछ भी कार्यक्रम के दौरान दिखाया जा रहा है वह सब काल्पनिक है, लेकिन ये बच्चे इन कार्यक्रमों को हकीकत के रूप में ही देखना और जीना पसंद करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में यह तथ्य भी उभर कर सामने आया है कि दस साल से कम उम्र के बच्चे अपने माता–पिता से मारपीट करने से भी नहीं डरते। यदि बच्चों की कोई बात नहीं मानी जाए तो वे अपने माता–पिता के प्रति बहुत ही हिंसक और उग्र रूप धारण कर लेते हैं। बच्चों की इस उभरती तस्वीर को लेकर मनोवैज्ञानिकों ने अभिभावकों को भी सचेत किया है। मौजूदा दौर में अधिकांश लोग छोटे परिवार को

ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

तवज्जो दे रहे हैं। आज परिवारों में एक या दो बच्चों का चलन बढ़ रहा है। इस वजह से बच्चों को दुलार–प्यार अधिक मिलता है और वे जिद के चलते अपने माता–पिता पर हावी होते जा रहे हैं। अपनी जिद पूरी करवाने के लिए वे किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं। इसलिए माता–पिता को चाहिए कि बच्चों की अत्याधिक टीवी देखने की आदतों पर गंभीरता से लगाम लगाएं। जिससे उनके सुनहरे भविश्य की कल्पना को साकार बनाया जा सके।

शोध परिणाम :

शोध के महत्वपूर्ण परिणाम इस प्रकार हैं–

शोध का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह निकल कर सामने आया है कि टेलीविजन कार्यक्रमों के कारण बच्चों में आपराधिक प्रवृति का विकास हो रहा है। शोध में शामिल किए गए 100 परिवारों के 63 फीसदी बच्चों ने स्वीकारा कि उन्हें टेलीविजन पर हिंसात्मक कार्यक्रम देखना ज्यादा पसंद हैं। यह एक गंभीर मुद्दा है।

शोध में यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि अधिकतर बच्चे (90 प्रतिशत) केवल कार्टून आधारित कार्यक्रम ही देखना पसंद करते हैं। धारावाहिक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजन एवं अन्य कार्यक्रमों की तरफ उनका ध्यान ही नहीं जाता है।

शोध में यह तथ्य भी सामने आया कि आधे से अधिक (लगभग 55 प्रतिशत) बच्चे सप्ताह में 35 घंटे से अधिक टेलीविजन देखते हैं। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बच्चों के लिए यह अति हानिकारक स्थिति है।

शोध में शामिल किए गए 80 प्रतिशत अभिभावकों का मत था कि उनका बच्चा ज्यादा टीवी देखता है जिससे उसका वास्तविक विकास प्रभावित हो रहा है।

टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने के कारण बच्चों की पढ़ाई पर भी असर देखा जा रहा है।

जबकि टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव के कारण बच्चे एकांत प्रिय हो रहे हैं।

साथ ही यह भी तथ्य निकलते हैं कि टेलीविजन कार्यक्रमों के कारण बच्चे समय से पहले युवा हो रहे हैं इसका कारण कार्यक्रमों में दिखाई जा रही अश्लीलता को भी माना जा सकता है।

ज्यादातर अभिभावक यह भी मानते हैं टेलीविजन पर दिखाए जा रहे कार्यक्रमों से उनके बच्चों में नकारात्मक प्रवृत्ति का विकास हो रहा है।

टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने के कारण टेलीविजन पर विज्ञापित वस्तुओं की मांग में बच्चों की रूचि बहुत ज्यादा है।

टेलीविजन कार्यक्रमों के कारण बच्चों के रात को सोने के समय में भी प्रभाव पड़ा है। रात को देर से सोने के कारण उन्हें पूरी नींद नहीं मिल पाती, जिससे वे कक्षा में उंघते पाए जाते हैं।

शोध से निष्कर्ष निकलता है कि टेलीविजन कार्यक्रमों के कारण बच्चों में खेलों के प्रति रुचि कम हुई है। इससे बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास अवरुध्द हो रहा है।

ज्यादातर अभिभावक मानते हैं टेलीविजन पर दिखाए जा रहे कार्यक्रम ऐसे होते हैं जिनको परिवार के सदस्य एक साथ नहीं देख सकते हैं।

सुझाव :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव इस प्रकार है–

अभिभावकों को चाहिए कि बच्चों के टीवी देखने पर नियंत्रण रखें ताकि बच्चों को अवांछित कार्यक्रमों को देखने से नियंत्रित किया जा सके।

शोध में तथ्य सामने आया कि जिन बच्चों के कमरों में टीवी रखा जाता है वे ज्यादा टेलीविजन देखते हैं।

अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को प्यार व तर्कसंगत उदाहरणों के माध्यम से समझाएं कि टीवी कार्यक्रम सच नहीं होते हैं। टेलीविजन पर प्रसारित किए जाने वाले ज्यादातर कार्यक्रम काल्पनिक होते हैं।

अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों के लिए सत्साहित्य व अच्छे साहित्य, खरीद कर लाएं तथा बच्चों को अच्छी किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बच्चों को खेलकूद एवं अन्य शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रेरित करें। उन्हें अधिक रात तक और लगातार अधिक समय तक टेलीविजन नहीं देखने दें।

बच्चों के सामने अभिभावक स्वयं टेलीविजन पर सकारात्मक, ज्ञानवर्धक एवं स्वस्थ मनोरंजन के कार्यक्रमों को अधिक महत्व दें।

एकांकी परिवारों के बढ़ते चलन ने आज अधिकतर बच्चों को अकेला रहने पर मजबूर किया है यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है। इसलिए अभिभावकों अधिक से अधिक समय अपने बच्चों के साथ बिताना चाहिए।

बच्चों की जिद पूरी करने में सही एवं गलत का ध्यान रखें।

बढ़ती उम्र के बच्चों में जिज्ञासाओं का होना स्वाभाविक है अतः अभिभावकों को चाहिए कि वे उनकी जिज्ञासाओं को शांत करने में सकारात्मक रुचि ले, ना कि मासूमों को इंटरनेट के हवाले कर दें। उनकी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए सत्साहित्य संबंधी कहानियों, अच्छे साहित्य, वेद, पुराण, गीता, नाना–नानी की कहानियों आदि का सहयोग लें।